

प्रमेयरत्नमाला (फोल्डर नं. ०११३१)

श्रीमल्लघु अनन्तवीर्य विरचित – अनुवादक-रमेशचन्द्र जैन

मुख्य टाइटल

समर्पण

संकल्प

आभार

प्रकाशकीय

प्रस्तावना

विषयानुक्रमणिका

प्रथम समुददेश -----	१-२८
मङ्गलाचरण -----	१
प्रमाण और प्रमाणभास का लक्षण कहने की प्रतिज्ञा -----	४
सम्बन्ध, अभिधेय और प्रयोजन का कथन -----	६
प्रमाण का लक्षण -----	१०
प्रमाण के लक्षण में ज्ञान विशेषण का समर्थन-----	१३
ज्ञान निश्चयात्मक है -----	१४
अपूर्वार्थ का लक्षण -----	१६
स्वव्यवसाय का लक्षण -----	१७
ज्ञान का प्रामाण्य -----	२१
द्वितीय समुददेश -----	२९-८२
प्रमाण के भेद -----	२९
प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण-----	३०
प्रत्यक्ष का लक्षण -----	४२
वैराघ का लक्षण-----	४३
सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष -----	४५
अर्थ और आलोक सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष के कारण नहीं हैं -----	४७
ज्ञान अर्थ का प्रकाशक होता है -----	४८
योग्यता से पदार्थों के जानने की व्यवस्था -----	४९
कारण होने से पदार्थ परिच्छेद्य हैं इसका निराकरण -----	५१
मुख्य प्रत्यक्ष -----	५१
आवरण सहित और इन्द्रिय जनित मानने पर ज्ञान का प्रतिबन्ध सम्भव -----	५२
सर्वज्ञता पर शङ्का -----	५२
सर्वज्ञता का समर्थन -----	५८
नैयायिकों की सृष्टिकर्तृत्व विषयक मान्यता -----	६४

नैयायिकों की मान्यता का निराकरण -----	६५
ब्रह्म के सदभाव को सिद्ध करने वाले प्रमाण का अभाव -----	७४
तृतीय समुददेश -----	८३-१५३
परोक्ष का लक्षण -----	८३
परोक्ष के भेद -----	८३
स्मृति का लक्षण -----	८४
प्रत्यभिज्ञान का लक्षण -----	८४
ऊह प्रमाण -----	८६
अनुमान प्रमाण -----	८७
हेतु का लक्षण -----	८७
अविनाभाव का लक्षण -----	९१
सहभाव -----	९१
क्रमभाव -----	९१
साध्य का लक्षण -----	९२
असिद्ध विशेषण की सार्थकता -----	९२
ईष्ट और अबाधित विशेषणों के ग्रहण का कारण -----	९३
पक्ष -----	९४
विकल्प सिद्ध धर्मी में सत्ता और असत्ता दोनों ही साध्य हैं -----	९६
प्रमाण सिद्ध और उभयसिद्ध धर्मी में साध्यकर्म से विशिष्ट -----	९८
व्याप्तिकाल में धर्म ही साध्य होता है -----	९९
गम्यमान भी पक्ष का प्रयोग -----	१००
पक्ष और हेतु दोनों ही अनुमान के अंग हैं -----	१०३
उदाहरण साध्य की जानकारी का अंग नहीं है -----	१०३
उपनय और निगमन अनुमान के अंग नहीं हैं -----	१०६
समर्थन ही हेतु का यथार्थ रूप है -----	१०७
बालकों की व्युत्पत्ति के लिए उदाहरणादि हैं -----	१०७
अन्वय और व्यतिरेक दृष्टान्त -----	१०८
उपनय -----	१०९
निगमन -----	१०९
स्वार्थ और परार्थानुमन -----	११०
उपलब्धि और अनुपलब्धि हेतु -----	११२
अस्तित्व साध्य होने पर अविरुद्धोलब्धि के छह भेद -----	११३
कारण के व्यापार के आश्रित ही कार्य का व्यापार -----	११६
सहचर हेतु का स्वभाव, कार्य और कारण हेतु में अन्तर्भाव नहीं होता है -----	११७
प्रतिज्ञादि पाँच अवयव -----	११८

कार्य हेतु -----	११८
कारण हेतु -----	११९
पर्वचर हेतु -----	११९
उत्तरचर हेतु -----	११९
सहचर लिंग -----	११९
विरुद्धोपलब्धि के भेद -----	११९
अविरुद्धानुपलब्धि के भेद -----	१२१
विधि के अस्तित्व के सिद्ध करने में विरुद्धानुपलब्धि के भेद -----	१२३
तथोपपत्ति और अन्यथानुपपत्ति -----	१२६
आगम का स्वरूप -----	१२८
मीमांसाकों की आपत्ति -----	१२९
मीमांसकों का निराकरण -----	१३४
शब्दादि वस्तु का ज्ञान कराने के कारण हैं -----	१४७
अन्यपोह का निराकरण -----	१४८
चतुर्थ समुददेश -----	१५४-१८९
प्रमाण का विषय -----	१५४
सांख्यभिमत प्रधान तथा उसका निराकरण -----	१५४
बौद्धों के अनुसार विशेष ही वस्तु का स्वरूप हैं -----	१५९
बौद्धों का निराकरण-----	१६५
क्षणिकत्व का निराकरण -----	१६८
परस्पर निरपेक्ष सामान्य विशेष की मान्यता वाले योगों का निराकरण-----	१७३
अन्कान्तात्मक वस्तु के समर्थन हेतु हेतुद्वय -----	१८१
दो प्रकार का सामान्य -----	१८२
विशेष के दो भेद -----	१८३
पर्याय-----	१८३
आत्मा के व्यापकपने का निराकरण -----	१८४
आत्मा के पृथिव्यादिचतुष्टय रूप होने की असम्भवाना -----	१८६
व्यतिरेक -----	१८८
पञ्चम समुददेश -----	१९०-१९१
प्रमाण के फल -----	१९०
फल प्रमाण से कथञ्चित अभिन्न है और कथञ्चित भिन्न हैं -----	१९०
षष्ठ समुददेश -----	१९२-२२८
प्रमाण के स्वरूपाभास -----	१९२
प्रत्यक्षाभास -----	२००
परोक्षाभास -----	२००

स्मरणाभास -----	२००
प्रत्यभिज्ञानाभास -----	२०१
तर्काभास -----	२०१
अनुमानाभास -----	२०१
पक्षाभास -----	२०२
हेत्वाभासों के भेद -----	२०४
दृष्टान्ताभास -----	२०९
बालप्रयोगाभास -----	२११
आगमभास -----	२१२
संख्याभास -----	२१३
विषयाभास -----	२१६
फलाभास -----	२१८
अपने पक्ष के साधन और परपक्ष के दूषण की व्यवस्था -----	२२०
नयों का विवेचन -----	२२१
वाद का लक्षण -----	२२६
पत्र का लक्षण-----	२२६
सूत्रकार का अन्तिम श्लोक -----	२२६
टीकाकार की प्रशस्ति -----	२२८

परिशिष्टम्